CBSE Class 09 Hindi Course B
NCERT Solutions
स्पर्श पाठ-10 रहीम [कविता]

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

1. प्रेम का धागा टूटने पर पहले की भाँति क्यों नहीं हो पाता?

उत्तर:- प्रेम आपसी लगाव, आकर्षण और विश्वास के कारण होता है। यदि एक बार यह लगाव और विश्वास टूट जाए, तो फिर उसमें पहले जैसा भाव नही रहता । ठीक वैसे ही जैसे कि धागा टूटने पर जुड नही पाता, यदि उसे जोडा जाए तो गॉठ पड ही जाती है ।

2. हमें अपना दुःख दूसरों पर क्यों नहीं प्रकट करना चाहिए? अपने मन की व्यथा दूसरों से कहने पर उनका व्यवहार कैसा हो जाता है?

उत्तर:- हमें अपना दुःख दूसरों पर नहीं प्रकट करना चाहिए, क्योंकि इससे लोग मजाक उडाते है और दुख को बॉटने की अपेक्षा उपहास कर जले पर नमक छिडकते है।

3. रहीम ने सागर की अपेक्षा पंक जल को धन्य क्यों कहा है?

उत्तर:- सागर पानी से लबालब भरा होने के बावजूद उसके जल को कोई पी नहीं पाता क्योंकि उसका स्वाद खारा होता है। इसके विपरीत पंक के जल को पीकर छोटे जीव-जंतु की प्यास बुझ जाती है। वे तृप्त हो जाते हैं इसलिए रहीम ने सागर की अपेक्षा पंक जल को उसकी उपयोगिता के कारण धन्य कहा है।

4. एक को साधने से सब कैसे सध जाता है?

उत्तर:- यदि व्यक्ति लालचपूर्ण विचारो को त्याग कर संयम एवं नियम से सबसे महत्वपूर्ण कार्य करें, तो उसके सम्पूर्ण कार्य सुचारू रूप से संपन्न एवं सफल होते है अर्थात यदि किसी सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य पर ध्यान दिया जाए, तो उससे संबंधित सारे कार्य सफल हो जाते है। फिर एक सफलता के बाद क्रम से अन्य सफलताऍं भी मिलने लगती है।

5. जलहीन कमल की रक्षा सूर्य भी क्यों नहीं कर पाता?

उत्तर:- यद्यपि सूर्य कमल का पोषण करता है परन्तु पानी नहीं होता तो कमल सूख जाता है क्योंकि कमल को पुष्पित होने के लिए जल की आवश्यकता होती है। अत: कमल की संपत्ति जल है उसके न रहने पर सूर्य भी उसकी सहायता नहीं कर सकता है।

6. अवध नरेश को चित्रकूट क्यों जाना पड़ा?

उत्तर:- अवध नरेश अर्थात श्री राम को चित्रकुट इसलिए जाना पडा क्योकि उन्हे माता-पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए चौदह वर्षो तक वनवास भोगना था। उसी वनवास के दौरान उन्हे चित्रकुट जैसे रमणीय वन में रूकने का अवसर मिला ।

7. 'नट' किस कला में सिद्ध होने के कारण ऊपर चढ़ जाता है?

उत्तर:- 'नट' स्वयं को समेटने अर्थात सिकोडने की कला मे सिद्धस्थ है। इसी कला के कारण वह कुंडली मे से निकलकर उपर चढ जाता है।

8. 'मोती, मानुष, चून' के संदर्भ में पानी के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- पानी जब स्वाति नक्षत्र में किसी सीपी में पडता है, तो वह मोती बन जाता है। मोती के लिए यह पानी कांति है, जिसके बिना मोती का कोई महत्व नही होता। व्यक्ति के लिए पानी अर्थात सम्मान बेहद आवश्यक है, क्योकि बिना सम्मान के मनुष्य का जीवन निरर्थक है। उसी प्रकार, चून अर्थात आटे का प्रयोग पानी के बिना संभव नही है।

9. निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए -

1. टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।

उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि प्रेम सम्बन्धी धागे को यत्नपूर्वक सहेजकर रखना चाहिए। यह धागा यदि एक बार टूट जाए तो अपनी सामान्य स्थिति में नहीं लौट सकता। यदि लौट भी जाए तो उसमें गाँठ हमेशा ही बरक़रार रहेगी।

2. सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय।

उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि अपना दुःख अपने तक ही सीमित रखें। उसे सबको बताकर हँसी-मज़ाक का पात्र न बने क्योंकि दूसरे का दुःख कोई बाँटता नहीं है।

3. रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अघाय।

उत्तर:- रहीम कहते है कि व्यक्ति को सर्वाधिक मुख्य उददेश्य को भली-भॉति ध्यान मे रखना चाहिए। इससे न केवल वह कार्य, बल्कि उससे संबंधित अन्य कार्य भी सफल होते है।

4. दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहिं।

उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि दोहे में अक्षर कम होने के बावजूद उसमें गूढ़ अर्थ छिपा रहता है। उनका गूढ़ अर्थ ही उनकी गागर में सागर भरने की प्रवृत्ति को स्पष्ट कर देता है। ठीक वैसे ही जैसे नट कुंडली को समेटकर कूदकर रस्सी पर चढ़ जाता है। कवि के कहने का तात्पर्य यह है कि हम जीवन में जो भी कार्य करें उसमें हमें सिद्धहस्त होना चाहिए।

5. नाद रीझि तन देत मृग, नर धन हेत समेत।

उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि मधुर संगीत को सुनकर हिरन अपने प्राण तक न्योछावर करने के लिए तैयार हो जाता है और मनुष्य किसी कला पर मोहित होकर उसे धन देता है और कल्याण करता है परन्तु जो दूसरों से प्रसन्न होकर भी कुछ नहीं देता, वह नर पशु समान है।

6. जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि।

उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि हर-एक छोटी-बड़ी वस्तु का अपना-अपना महत्त्व होता है। जो काम सुई कर सकती है वह काम

तलवार नहीं कर सकती है और जो काम तलवार कर सकती है वह कार्य सुई नहीं कर सकती अत: सबकी अपनी-अपनी उपयोगिता होती है और किसी की भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

7. पानी गए न ऊबरै, मोती मानुष चून।
उत्तर:- रहीम जी कहते है कि मोती, मनुष्य और चून अर्थात आटा बिना पानी के व्यर्थ है। स्वाति नक्षत्र में पानी की बूँद ही सीप मे मोती का रूप ले लेती है। यह पानी ही मोती को कांतिमान बनाता है और बिना कांति अर्थात चमक का मोती व्यर्थ है। मनुष्य बिना पानी अर्थात सम्मान के जीवित नही रह सकता, उसका जीवन निरर्थक हो जाता है ओर चून बिना पानी के उपयोग में नही लाया जा सकता।

10. निम्नलिखित भाव को पाठ में किन पंक्तियों द्वारा अभिव्यक्त किया गया है -
1. जिस पर विपदा पड़ती वही इस देश में आता है।
उत्तर:- जा पर विपदा पड़त है, सो आवत यह देस।

2. कोई लाख कोशिश करे पर बिगड़ी बात फिर बन नहीं सकती।
उत्तर:- बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।

3. पानी के बिना सब सूना है अत: पानी अवश्य रखना चाहिए।
उत्तर:- रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून।

4. उदाहारण के आधार पर पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए -
उत्तर:- उदाहारण - कोय-कोई, जै-जो

5. ज्यों, कछु, नहिं, कोय, धनि, आखर, जिय, थोरे, होय, माखन, तलवारि, सींचिबो, मूलहिं, पिअत, पिआसो, बिगरी, आवे, सहाय, ऊबरै, बिनु, बिथा, अठिलैहैं, परिजाय
उत्तर:-

ज्यों	जैसे
कछु	कुछ
नहिं	नहीं
कोय	कोई
धनि	धन्य
आखर	अक्षर
जिय	हदय

थोरे	थोड़े
होय	होना
माखन	मक्खन
तलवारि	तलवार
सींचिबो	सींचना
मूलहिं	जड
पिअत	पीना
पिआसो	प्यासा
बिगरी	बिगड़ी
आवे	आना
सहाय	सहायक
ऊबरै	उबरना
बिनु	बिना
बिथा	व्यथा
अठिलैहैं	मजाक उडाना
परिजाय	पड़ जाना